मिथिलाक प्रमुख नदी

राष्ट्रक पिता पर्वत आ माता नदीकेँ कहल जाइत अछि । पिता अपन कठोरता, चिंतामुक्त, आ भयसँ रक्षार्थ प्रहरी सदृश ठाढ़ तँ माता सचेष्ट, गतिशील, मुक्तिदात्री रसवती छथि ।

धार्मिक ओ ऐतिहासिक दृष्टिकोणेँ नदीक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । प्राचीन कालमे अधिकांश सभ्यताक विकास नदीए तट पर भेल अछि । कृषिक विकास आ प्रथमावागमनक मार्गक रूपमे नदिए छल । ऋषि-मुनि, भूपति आदिक वास स्थान सेहो अधिकांशतः नदीएक तट छल । नदीक कल-कल, छल-छल कविजनक हृदयकेँ सेहो द्रवित कऽ काव्य रचनाक हेतु उत्सुक बना दैत अछि ।

मिथिला तँ सद्यः नदीएक प्रदेश थिक । वरदान आ अभिशाप एकर दुनू पक्ष अछि एहि दृष्टिएँ प्रस्तुत अछि मिथिलाक किछु प्रमुख नदीक वर्णन-

गंगा- गंगाक व्युत्पत्तिमूलक अर्थ होइछ-

'गां पृथ्वी गच्छतीति गंगा', अर्थात् जे स्वर्गसँ सोझें पृथ्वी पर आबय ।

दोसर- 'गं अव्ययं (स्वर्ग) गमयतीतिगंगा', अर्थात जे स्वर्ग दिस लऽ जाय ओ गंगा छथि तेँ ई कहल जा सकैत अछि जे स्वर्गसँ आबथि वा लऽ जाथि दुनू दृष्टिएँ त्रयताप आ पाप विनाशिनी गंगाक बड़ महत्त्व अछि । शास्त्र आ पुराणादिमे सेहो एकर यत्र-तत्र चर्च भेल अछि ।

पौराणिक आ जनश्रुतिक आधार पर गंगाक अवतरण विभिन्न प्रकारसँ मानल जाइछ । पहिल तँ ई जे स्वयं ब्रह्मा हिनक सृष्टि कयलनि आ नाम रखलनि गंगा ।

दोसर ई जे-भागीरथ अपन पितर लोकनिक उद्धारक निमित्त अति कठोर

तपस्यासँ गंगाकेँ प्रसन्न कऽ पृथ्वी पर अनलनि तेँ हिनक नाम पड़ल भागीरथी । एही तरहेँ विभिन्न कारणादिसँ हिनक विभिन्न नाम सेहो पड़ल, यथा- जाह्नवी, नदीश्वरी, त्रिपथगा, वैष्णवी, सागरप्रिया, धर्मद्रवी, भोगवती, विन्ध्यपाषाण, दारिणी, शान्ता, पुण्यदा, पूतिकाशिवा, महानदी, शतमुखी, शुक्ला, मकरवाहिनी आदि ।

पवित्रता आ धार्मिक दृष्टिएँ ई सर्वत्र पूजनीया आ पुण्यदा छथि । हरिद्वार प्रयाग, गंगासागर, सिमरिया आ सुलतानगंजक स्नानादि विशेष महत्त्वपूर्ण अछि ।

बिहारकेँ गंगा दू भागमे विभक्त करैत छथि उत्तर बिहार आ दक्षिण बिहार । उत्तर बिहारक सरयू, गण्डकी, वागमती, कमला, कोसी, महानन्दा आदि तथा दक्षिण बिहारक-कर्मनाशा, सोन, पुनपुन, फल्गु आदि गंगाक सहायक नदी अछि ।

कोसी- कोसीक वास्तविक नाम 'कौशिकी' थीक, जकर अपभ्रंश आइ कोसी नामसँ लोकमे प्रचलित अछि । कोसी प्रबल प्रतापी विश्वामित्रक बहिन कहबैत छथि । धर्म शास्त्रादिमे कोसी महात्म्यक वर्णन विस्तृत रूपेँ कयल गेल अछि ।

कोसी नेपालक राजधानी काठमाण्डू नगरक पूर्वोत्तर सीमासँ प्रारम्भ भऽ गंगासँ मिलैत समुद्रमे प्रवेश कऽ जाइत अछि ।

मुदा कोसी अत्यन्त विनाशकारी सेहो छथि । हिनक विनाशकारी ताण्डव अत्यन्त प्रलयंकारी आ संतापदायिनी होइछ । सहरसा, पूर्णिया, खगड़िया, कटिहार, मधेपुरा, दरभंगा आदि क्षेत्र एहिसँ बेसी प्रभावित होइत अछि । एकर बाढ़िक विभीषिकाक हृदय विदारक दृश्य भुक्तभोगीक हृदय कँपा दैत अछि । क्षणहिमे गामक गाम निपत्ता कऽ ओकर नामोनिशान मेटा दैत छथि, तेँ एहि क्षेत्रक लोक एहिसँ भयाक्रांत रहैत छथि । एकर दारुण दृश्यक ज्वलंत उदाहरण अगस्त 2008

अछि, जाहिमे घंटे भरिमे गामक गाम बिला गेल । लाखक-लाख लोक प्रभावित भेलाह, कतेको व्यक्ति-वस्तु दहा-भसिया गेलाह, कतेको अन्यत्र शरण लेलनि । एकर दशा-दिशाक अनिश्चिततासँ लोकक स्थिरता नहि होइछ । एकर जीवंत दृश्यावलोकनक लेल मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध रचनाकार धीरेन्द्र आ राजकमल चौधरीक क्रमशः 'डाइन कोसी' आ 'अपराजिता' द्रष्टव्य थिक ।

गण्डक- गण्डक उत्तर बिहारक मुजफ्फरपुर आ सारण जिलाक सीमा बनबैत, हाजीपुर ओ सोनपुरक बीचसँ तीव्र गतिसँ बहैत पटनाक सोझाँ गंगामे मिलि जाइत अछि ।

गण्डककेँ नारायणी, शालीग्रामी आ ब्रह्मरूपा सेहो कहल जाइछ । पुराणादिमे एकर विशद् वर्णन कयल गेल अछि । एकर स्नानक विशेष फल आ एहि तट पर संस्कारादि धार्मिक अनुष्ठान महापुण्यदा होइछ । एहिमे स्नान कयनिहार महापुण्य आ वाजपेय यज्ञक भागी होइत छथि । कार्तिक पूर्णिमामे एहिमे स्नानक विशेष फल कहल गेल अछि । एही तट पर बाबा भोला हरिहरनाथक प्रसिद्ध महादेव मंदिर अछि आ गंगाक कछेरमे गज ओ ग्राह आ भगवान विष्णुक मूर्ति अछि । एही गण्डकीक तट पर कार्तिक मासमे (मास भरि) एशिया प्रसिद्ध पशुमेला विस्तृत क्षेत्रमे लगैत अछि जे हरिहर क्षेत्र मेलाक नामसँ प्रसिद्ध अछि । एहिमे भिन्न-भिन्न पशुक अतिरिक्त आवश्यकताक प्रत्येक वस्तु सहज ढंगसँ उपलब्ध होइछ ।

कमला- कमला मिथिलाक प्रसिद्ध नदी थिकीह, पूर्वमे ई जीवछ कमला कहबैत छलीह मुदा कालान्तरमे कमला बलानक नामसँ प्रसिद्ध भऽ गेलीह । तकर मुख्य कारण इएह बुझाइछ जे आब ई कमला बलान नदीमे मिलि कऽ बहैत छथि तेँ कमला-बलान भऽ गेलीह । पवित्रता आ पुण्यदाक दृष्टिएँ गंगाक सदृश मानल जाइत छथि ।

कमला नेपालक पहाड़ी भागसँ निकलि जयनगर, दरभंगा, झंझारपुर आदि

क्षेत्रसँ होइत पूर्व-दक्षिण दिस आगू बढ़ैत कोसीमे मिलि जाइत छथि । कमला गिरिराज हिमाद्रिक वरदानक फलस्वरूप गंगा सदृश पवित्र आ पतितपावनी मानल गेलीह तेँ हिनका कलिक गंगा सेहो कहल गेल अछि । एहिमे स्नान आदि धार्मिक अनुष्ठानसँ अक्षय लाभ होइत अछि ।

झंझारपुरमे कमला बलानक उपर जे एक संग सड़क आ रेलमार्गक रास्ता अछि से प्रायः मिथिलाञ्चलक एसगर उदाहरण अछि । एहिमे विशाल यातायातक हेतु पूलक निर्माण कार्य भारतक पूर्व रेलमंत्री मिथिलाक गौरव जननायक ललित बाबूक समयेसँ सरकारक विचाराधीन अछि । आर्थिक दृष्टिएँ सेहो कमलाक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । एक भाग जँ कोसी आस-पासक भूमिकेँ उस्सर बनयबाक लेल प्रसिद्ध अछि तँ दोसर दिस कमला ऊर्वर बनयबाक लेल ।

त्रियुगा– त्रियुगा नदी तिलयुगा नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि । पुराणादिमे एहि नदीक चर्चा तँ कयले गेल अछि; कवीश्वर चन्दा झा सेहो अपन प्रसिद्ध पोथी 'मिथिला भाषा रामायण' मे एहि रूपेँ कयलनि अछिः-

"कमला त्रियुगा अमृता, धेँसुरा वागमती कृतसारा ।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति तेँ मिथिला विद्यागारा ।।

त्रियुगा नेपालक पूर्वी तराई भागसँ निकलि राजविराज, दरभंगा, सहरसा होइत निर्मलीक दक्षिण स्वयं कोसीक पुरनाधारमे मिलि कऽ बहैत अछि । मैनाक पुत्री मेनका आ त्रियुगा थिकीह, जाहिमे त्रियुगा नदीक रूपमे बहैत छथि । एहिमे स्नान पूजादिक विशेष फल अछि । ई पुत्रार्थीकेँ पुत्रक आ धनार्थीकेँ धन आशीर्वाद रूपमे दैत छथि ।

वागमती– वागमती, वाङमती, वारवत्या, वेगवतीक नामसँ सेहो प्रसिद्ध

छथि । ई नेपालक काठमाण्डूसँ निकलि सिंघिया, रोसड़ा, दरभंगा जिलाक विभिन्न क्षेत्रसँ होइत गण्डकसँ मिलैत अछि । इएह हायाघाटक पश्चिमोत्तर भागमे संयुक्त भऽ कऽ 'करेह' नदीक नामसँ विख्यात अछि । पुनः ई नदी कमलासँ मिलैत कोसी नदीमे विलीन होइत छथि ।

वागमतीक पौराणिक महात्म्य अधिक अछि तेँ कहल गेल अछि जे भागीरथीक जलसँ वागमतीक जल सौ गुणा अधिक पवित्र अछि । एकर आस-पासक क्षेत्र ऊर्वर मानल जाइत अछि । वागमतीएक तट पर भवदेव सिंह अपन प्राणांत कयलनि आ चण्डेश्वर तुला पुरुष दान यज्ञ कयने छलाह । यद्यपि पूर्वमे एकर धार बहुत तीव्र छल मुदा कालक्रमे किछु कम भेल अछि । मुदा वर्षाकालीन ऋतुमे अथवा बाढ़िक समयमे एकर उफान तबाही मचा दैत अछि ।

लक्ष्मणा- लक्ष्मणा नदी लखनदेइ वा लक्ष्मणावती नामसँ सेहो प्रसिद्ध अछि । ई सीतामढ़ीसँ रून्नी सैदपुर आ मुजफ्फरपुर-दरभंगा जिलासँ निकलैत सुस्ता नामक गामक निकट वागमतीक 'सिपरी' धारसँ मिलि वागमतीक मुख्य धारासँ मिलि जाइत अछि । एहिमे स्नान कयलासँ जन्मार्जित पापक क्षय भऽ जाइछ, एहन लोकक विश्वास सुनबामे अबैछ ।

यमुना/जमुने- जमुने नदी नेपालक निकट जनकपुर धामसँ होइत हरलाखी (मधुबनी) आ दरभंगा जिलाक दक्षिण दिससँ बहैत विशुपुरक निकट 'अधवारा' नदीमे मिलैत पुनः आगू बढ़ि 'थोमने' नामक नदीमे मिलि जाइत अछि ।

थोमने - थोमने दरभंगासँ आगू दक्षिण-पश्चिम होइत बहैत अछि । प्रसिद्ध जगज्जननी उच्चैठ भगवतीक मंदिर, जे कालीदासक डीह पर अवस्थित अछि, ताहिठाम किछु लोक एकरा कमला सेहो कहैत छथि ।

व्याघ्रमुखी/व्याघ्रवती- लखनदेई, मरने, अधवारा, धाउस, जमुने बेलौंती आदिक ज़ल भण्डार नेपालक तराई भागसँ निकलि सम्मिलित रूपसँ प्रवाहित

होइछ जे छोटी वागमती कहबैछ । एकर वास्तविक नाम व्याघ्रमुखी वा व्याघ्रवती अछि । बेनीपट्टी, रानीपुर, पाली, मधवन, बेंगटा, बल्हा, रचौली आदि एहि नदीक तट पर अछि । एही पाली ग्राम निवासी धीरेश्वरक पुत्र ज्योतिरीश्वर ठाकुर छलाह जिनकर वर्णरत्नाकर, धूर्तसमागम आ पंचसायक प्रमुख ग्रन्थ थिक ।

खिरोइ – खिरोइ नदी क्षीरोदकी, विरजा नामसँ सेहो जानल जाइत अछि । ई अपन उद्गम स्थलसँ दक्षिण-पश्चिम होइत दरभंगा मुजफ्फरपुर जिलाक विभिन्न क्षेत्रसँ निकलैत लहेरियासरायक 'एकमीघाट' पर व्याघ्रमती (छोटी वागमती)मे मिलैत अछि । यद्यपि प्रवाहक दृष्टिकोणसँ ई बड़ छोट नदी अछि मुदा ऐतिहासिक आ पौराणिक दृष्टिसँ अति महत्त्वपूर्ण ।

जीवछ कमला – जीवछ कमला, जीवाइका वा जीववत्सा कमला सेहो कहल जाइछ । ई बेनीपट्टी दरभंगा होइत कमलामे संगम होइछ । धार्मिक दृष्टिएँ ई नदी पुत्रदा छथि । किंवदंती अछि जे निःसंतान महिला एकर स्नान आ पूजा-अर्चना कऽ पुत्रक कामना करैत छथि । तेँ संतानार्थी लोकनिक भीड़ एहि नदीमे खूब देखल जा सकैत अछि ।

एकर अतिरिक्त बहुत रास छोट-छोट नदी सेहो मिथिलामे बहैत अछि । ई नदी सभ मिथिलाञ्चलक संस्कृतिक एक अभिन्न अंग तँ अछिए संगहि एहि क्षेत्रक विकास-यात्राक एक मूक साक्ष्य सेहो । एहि क्षेत्रक हरियालीक अतिरिक्त माँछ, मखान आदि एहि क्षेत्रक विशिष्टताक प्रतीक वस्तु सभक उद्गम-स्रोत प्रायः इएह जल-राशि रहलीह अछि । योजनाबद्ध प्रबंधनसँ एकरा एहि क्षेत्रक लेल आओरो उपयोगी बनाओल जा सकैत अछि ।

◆◆◆

प्रश्न ओ अभ्यास

1. गंगाक पाँचटा पर्यायवाची शब्द लिखू ।
2. कोसीक वास्तविक नाम की थीक ?
3. वर्ष 2008मे सभसँ बेसी कोन नदी कष्टकारक रहल अछि, वर्णन करू ।
4. गण्डकक दू गोट पर्यायवाची शब्द लिखू ।
5. हरिहर क्षेत्र मेला पर एक अनुच्छेद लिखू ।
6. त्रियुगा नदीक चर्चा करैत कवीश्वर चन्दा झा अपन मिथिला भाषा रामायणमे की कहने छथि ?
7. मिथिलाक नदी मिथिलाक हेतु कखन वरदान सिद्ध होयत ?वर्णन करू ।
8. मिथिलाञ्चलक सामाजिक–सांस्कृतिक विकासमे एहि नदी सभक भूमिका पर मनन करू तथा शिक्षकसँ मार्गदर्शन प्राप्त कऽ एक सय शब्दमे अपन टिप्पणी लिखू ।

◆◆◆